

1333. ÇATAKÂV. 3. c. °कण्ठकरुणं रात्रौ.

1337. ÇATAKÂV. 34. a. धृष्टैर् st. धूर्तैर्, उत्पादयद्भिः st. आपादयद्भिः. b. विषयामिषं किल.

1343. BHARTR. 2, 56 lith. Ausg. III. b. नैव st. नाम.

1350. = VRDDHA-KÂṆ. 8, 12. a. न देवो विद्यते काष्ठे. c. देवस्, wie gelesen werden muss (die Hdschr. des VIKRAMÂ. aber देवो). Vgl. Spruch अग्निदेवत्रं विना im zweiten Nachtrage.

1362. = KÂṆ. 31 bei WEBER. VRDDHA-KÂṆ. 1, 15. ÇUK. ed. Bomb. S. 21. a. नदीनां च नखीनां च VRDDHA-KÂṆ. b. आततायिनां st. शस्त्रपाणिनाम् ÇUK.

1363. ÇATAKÂV. 74 (b. शास्तिशतकैः. c. धमावेगादङ्गे, भव्यमसमः). BHARTR. 1, 88 lith. Ausg. III (d. स्मरौपस्मरौ).

1366. Vgl. Spruch 3170.

1374. = KÂṆ. 4 bei WEBER.

1377. Die zweite Hälfte = PAÑKAR. 1, 14, 97, c. d.

1382. Die ed. Bomb. hat in b. यत्, wie wir geändert haben, aber in d. fehlerhaft पालयेत् st. पातयेत्.

1383. = MBH. 13, 5571. c. एष संक्षेपतो धर्मः.

1394. Vgl. Spruch 4296.

1395. = KÂṆ. 46 bei WEBER. a. नदीतीरे. c. d. स्त्रीणामपि (auch स्त्रीणां चापि) च यत्कार्यं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्.

1397. Lies Geschmack st. Saft.

1403. = VRDDHA-KÂṆ. 16, 1.

1406. ÇATAKÂV. 103. b. चुञ्चवः.

1409. = VRDDHA-KÂṆ. 16, 5. a. न st. च.

1412. ÇATAKÂV. 32. d. विबुधैस्तसि धीयतां.

1413. = MBH. 12, 3218. b. अर्पयेत् st. आचरेत्. c. आगमानुगमं. d. मोक्षयीत st. पूजयेत.

1417. Im ÇKDR. u. प्रेषितं den PRĀKĪNA zugeschrieben. c. मनस्तत्रैव st. तत् तत्रैव.

1421. = ÇUK. ed. Bomb. S. 3. न पूजयन्ति ये पूज्यं न मान्यं मानयन्ति यं (॥) । जिवन्मृताश्च ते ज्ञेया मृताः स्वर्गं न यात्यपि ॥

1423. Vgl. Spruch 4603.

1426. c. प्रलोभं bedeutet wohl Verlockung, nicht Habsucht.

1431. BHARTR. 2, 93 lith. Ausg. III. a. कृन् st. वत्.

1432. = KAVITĀMṚTA. 88.

1434. = PRASAṆGĀBH. 11, a. c. स्तुत्यैवानुपपन्नान्तरं, दुर्जनान्दुःखयत्तः. d. बहुमता.